मरूमेघ
किसान ई पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध

ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022
आलेख प्राप्ति : 28-01-2022
स्वीकरण : 31-01-2022

दलहनी फसलः जायद मूंग की उन्नत खेती

रोशन कुमावत
शस्य विज्ञान विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा– 324001
ई मेलः kumawatroshan675@gmail.com

दलहनी फसल :– जायद मूंग की उन्नत खेती दलहनी फसलों में मूंग का विशेष महत्व है। चना और अरहर के बाद भारत में तीसरी महत्वपूर्ण दलहनी फसल है मूंग। यह फसल पकने में तीनों ऋतुओं में उगायी जा सकती है। मूंग की पोषण गुणवत्ता एवं पाचन क्षमता अच्छी होती है क्योंकि इसमें अच्छा मात्र में विटामिन एवं आवश्यक सूक्ष्म तत्व पाये जाते है। इसमें 25 % प्रोटीन पाया जाता है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की अनुंशसा के आधार पर एक वयस्क को 65 ग्राम दालों की आवश्यकता होती है, किन्तु दालों की कम उपलब्धता के कारण भारत में एक व्यस्क को 30 ग्राम दाले ही मिल पा रही है। सिंचाई की सुविधा वाले स्थानों पर वर्ष में तीसरी फसल के रूप में जायद मूंग की खेती की जा सकती है। इसकी खेती किसान को अतिरिक्त आय देने के साथ भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने में सहायक है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, कर्नाटक, तमिलनाडू, गुजरात एवं आन्ध्रप्रदेश देश के प्रमुख मूंग उत्पादक राज्य है।

उन्नत किस्में एवं विशेषताऐं :–

के 851 (1982) :– 30 से 70 दिन में पककर यह किस्म 8 से 10 क्वि. प्रति है0 उपज देती है।

पी डी एम – 139 (सम्राट) (2001) :– यह किस्म जायद के लिए उपयुक्त पायी गई है। यह किस्म 65–70 दिनों में पककर 6–8 क्विं 1 है. तक उपज देती है। यह किस्म व पीत चितेरी रोग से अवरोधी पायी गयी है।

पी डी एम – 11(1987) :– 60 से 65 दिन में पककर यह किस्म 10 से 12 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज देती है।

आई.पी.एम. 02–03(2009) :– वह किस्म खरीफ व जायद दोनो के लिये उपयुक्त पाई गई है। यह 60–70 दिनों में पककर 10–12 क्विंटल हैक्टर तक उपज देती हैं यह किस्म पीत चितेरी रोग से अवरोधी पाई है।

बुआई का समय :– जायद मूंग की बुआई का उत्तम समय मार्च का प्रथम पखवाड़ा माना गया है। बुआई सीडडिरल यह हल के पीछे चोंगा बाधकार पंक्तियों में हों।

भूमि का चुनाव :– अच्छे जल निकास व उच्च उर्वरता वाली भूमि सर्वोतम रहती है। खेत में पानी का ठहरा व फसयल को भारी हानि पहूँचाता हैं।

खेत की तैयारी :– पबी की कटाई के तुरन्त बाद आवश्यकतानुसार एक–दो बार जुताई कर खेत को तैयार कीजिये। अन्तिम तैयारी के समय ध्यान रखिये कि भूमि समतल हो जाये तथा जल विकास अच्छा हो।

भूमि उपचार :– भूमिगत कीटों व दीमक की रोकथान हेतु बुवाई से पूर्व क्यूनालफपॉस 1.5 प्रश. चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भूमि में मिलाये।

बीज उपचार :– मृदाजनित रोगों से बचाव के लिये बुआई से पहले प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम या आधा ग्राम कार्बेण्डेजियम से उपचारित करें।

राइजोबियम कल्चर से उपचार :– बीजो को राइजोबियम से उपचारित करने हेतु आवश्यकतानुसार पानी गर्म करके 300 ग्राम गुड़ का घोल बनाये तथा ठण्डा होने पर 600 ग्राम शाकाणु संवर्ध मिला दे। इस मिश्रण की एक हैक्टर में बोये जाने वाली बीजों पर भली–भांति परत चढ़ा देवें व छाया में सुखाकर बुआई करें।

उर्वरक :– जायद मूंग हेतु 20 किलो नत्रजन व 40 किलो फास्फोरस के प्रति हैक्टर आवश्यकता होती है। उर्वरक की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर देंवे।

बीज की बुआई :– जायद मूंग की बुआई के लिये 15 फरवरी से 15 मार्च तक का समय उपयुक्त रहता है अुवाई हेतु 15–20 किलो बीज की प्रति हैक्टर आवश्यकता होती है। कतार से कतार की दूरी 25 सेमी. और पौधे से पौधे दुरी 10 सेमी. रखनी चाहिऐ।

निराई–गुड़ाई :– आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहे। 30 दिन की फसल होने तक निराई–गुड़ाई कर देनी चाहिये जिससे खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के साथ मृदा वायु संचार में वृद्धि होने से फसल एवं सह जीवाणुओं की वृद्धि हेतु अनुकूल वातावरण तैयार होता है।

सिचाई :– फूल आने से पूर्व तथा फलियों में दाना बनते समय सिचाई अत्यन्त आवश्यक है तापमान एवं भूमि की नमी के अनुसार अतिरिक्त सिचाई देवें।

फसल संरक्षण :– एफिड्स(मोयला) मैलाथियान 50 ई सी या डायमिथोएट 30 ई सी एक लीटर या मैलाथियान 5 % चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

फली छेदर :– मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल या क्यूनालफॉस 25 ई सी एक लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़के।

चित्ती जीवाणु रोग :– इस रेग में छोटे गहरे भूरे रंग के धब्बे पत्तों पर तथा प्रकोप बढने पर फलियों और तनो पर दिखाई देते है।रोग दिखाई देते ही एग्रीमाईसिन 200 ग्राम व 2 किलो ताम्रयुक्त कवकनाशी का प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

पीतशिरा मोजेक (विषाणु रोग) :– रोग का प्रकोप दिखने पर डायमिथोटिक 30 ईसी का एक लीटर प्रति है. की दर से छिड़काव करें।

छाछया रोग :– रोग की रोकथाम हेतु प्रति हैक्टर ढ़ाई किलो घुलनशील गंधक 0.3 % या एक लीटर डायनोकेप 35 (केराथेन एस सी) के 0.1 % घोल का पहला छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही एवं दूसरा छिड़काव 10 दिन के अन्तर पर कीजिये अथवा 25 किलो प्रति हैक्टर गंधक चूर्ण का भुरकाव कीजिये।

पीलिया रोग :– रोग दिखने पर 0.1 % गंधक के तेजाब या 0.5 % फेल्स सल्फेट का छिड़काव करें।

कटाई एवं मड़ाई :– 80 % फुलियों के पक जाने पर फसल की कटाई गड़ासे या हँसिया से 10 से.मी. की ऊँचाई पर करना चाहिये। तत्पश्यात फसल को सूखने के लिये बन्डल बनाकर फसल को खलिहान में ले आते है। फिर 4 से 5 दिन सूखाने के पश्यात् पुलमैंन थ्रेसर द्वारा या लकड़ी के लठ्ठे पर पिटाई करके दानो को भूसे से अलग कर लेते है।

उपज :– उन्नत विधि से खेती करने पर 10–12 क्विंटल प्रति हैक्टर दाना 35–40 क्विंटल लकड़ी प्राप्त होती है।

भण्डारण :– भण्डारण हेतु नमी का प्रतिशत नमी 10–11 % से अधिक नहीं होना चाहिये। भण्डारण में कीटों से सुरक्षा हेतु एल्यूमिनियम फास्फाइड की 2 गोली प्रति टन प्रयोग करें।

****